इक्कीसवीं सदी में हिंदी उपन्यास

ललित श्रीमाली

इक्कीसवीं सदी में हिंदी उपन्यास

ललित श्रीमाली

अनुक्रम

अपनी बात : 3

इक्कीसवीं सदी का यथार्थ : 5

यथार्थ और उपन्यास में अंतर्संबंध : 23

इक्कीसवीं सदी का यथार्थ और हिंदी उपन्यास : 37

उपन्यास का शिल्प और भाषा : 67

इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में प्रयोग और नवाचार : 78

इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में शिल्पगत बदलाव : 96

गद्य की आन्तरिक उथल-पुथल : 106

विधायी अन्तःक्रियाएँ : 114

परिशिष्ट : 122

अपनी बात

विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं और संस्कृतियों का मेल और एकरूपीकरण ग्लॉबलाइजेशन है, जिसकी शुरूआत पंद्रहवीं सदी में उस समय हुई, जब कुछ यूरोपीय व्यापार की मंशा से नए देशों की खोज में निकले। ग्लॉबलाइजेशन की प्रक्रिया में वर्ष 2000 मील का पत्थर साबित हुआ। विख्यात पत्रकार और 'द वर्ल्ड इज फ्लैट' नामक बहुचर्चित किताब के लेखक थॉमस एल. फ्रीडमेन के अनुसार इस वर्ष में ग्लॉबलाइजेशन का तीसरा महान चरण शुरू होता है। पहले चरण के ग्लॉबलाइजेशन में चालक शक्ति ग्लॉबल होते हुए देश थे, दूसरे चरण में ग्लॉबलाइजेशन की चालक शक्ति व्यक्तियों को ग्लॉबल स्तर पर सहभागी होने की नई सुलभ ताकत है।

ग्लॉबलाइजेशन और उसमें बाजार की सर्वोपरि नियामक की हैसियत से संस्कृति सबसे अधिक प्रभावित हुई हैं। संस्कृति के उपभोग की कामना को संचार क्रांति और मीडिया विस्फोट से पंख लग गए है। साहित्य भी एक सांस्कृतिक उत्पाद है इसलिए औद्योगीकरण और तीव्रगति संक्रमण तथा एकरूपीकरण का उस पर गहरा और व्यापक असर हुआ है ग्लॉबलाइजेशन, संचार क्रांति, बाजार आदि की सर्वोपरिता से पारंपरिक साहित्य में जबर्दस्त बेचैनी है। खास तौर पर उपन्यास, जो सामाजिक रूपांतरण की प्रक्रिया से सीधे प्रतिकृत होता है, इसमें ग्लॉबलाइजेशन, बाजारवाद, संचार क्रांति आदि के कारण बदलाव की प्रक्रिया शुरु हो गई है। इसके सरोकार, वस्तु, शिल्प आदि निरंतर बदल रहे हैं। ये बदलाव बहुत व्यापक, गहरे और ध्यानाकर्षक हैं। ग्लॉबलाइजेशन, संचार क्रांति, बाजारवाद और उपभोक्तावाद जैसी परिघटनाओं ने सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन में व्यापक बदलाव उत्पन्न किए हैं। संचार क्रांति ने जहाँ सम्प्रेषण की तकनीक व आयामों में आमूलचूल परिवर्तन किए हैं, वही सांस्कृतिक संक्रमण के कारण जीवन-मूल्यों में भी बदलाव ला दिए हैं। उक्त वर्णित बदलावों के कारण उपन्यास के शिल्प प्रविधि और कथ्य भी ठीक उसी प्रकार से पारम्परिक नहीं रह गए हैं जैसा इनका चलन था। इन बदलावों और प्रभावों का महत्त्व अत्यन्त गंभीर और गहरा है।

हिंदी की उपन्यास-विधा अपने विस्तृत फलक पर ग्लॉबलाइजेशन, बाजारवाद, संचारक्रांति, नवसाम्राज्यवाद, सांस्कृतिक वर्चस्व, सांप्रदायिकता की समस्याओं को और भी विस्तार तथा गहराई से विश्लेषित करने की स्थिति में पहुँच गई है। अपने कथात्मक धरातल पर हिंदी उपन्यासों में बहुत ही सूक्ष्म संवेदन, गहराई और विस्तार में जाकर व्यक्ति, समाज और देश पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जा रहा है। इन समस्याओं के प्रभाव का एक भी पक्ष ऐसा नहीं है जिसका चित्रण हिंदी उपन्यासों में नहीं हुआ है और नई सदी की इन समस्याओं के प्रभावों का चित्रण करने के लिए उपन्यासकारों को तकनीक व मिथकों का सहारा लेना पड़ा हो जिससे उपन्यासों में भाषा और शिल्प के स्तर पर कई परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगे हैं और परिवर्तनों की पहचान का एक विनम्र प्रयास प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है।

ललित श्रीमाली

इक्कीसवीं सदी का यथार्थ

इक्कीसवीं सदी ग्लॉबलाइजेशन की सदी है। इस सदी का यथार्थ हमारे बीसवीं सदी के यथार्थ से पूर्णतया अलग है। आज हम जिस बाजारवाद के युग में जी रहे हैं वह पूर्णतया 21वीं सदी के ग्लॉबलाइजेशन की देन है। आज का ग्लॉबलाइजेशन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' न होकर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का कुटुम्ब है जो सम्पूर्ण विश्व को एक बाजार मानता है। इस बाजार में कम्पनी को अपना उत्पाद बेचना है। हमारे पारम्परिक मूल्यों से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को कुछ भी मतलब नहीं है। कहा जाता है कि हर युग का यथार्थ बदल जाता है, सत्य नहीं बदलता है। उसी प्रकार 21वीं सदी का यथार्थ बदल चुका है। आज हमारे रिश्ते भी बाजार तय करने लगा है। यह बाजारवाद महानगरों में ही नहीं छोटे-छोटे गाँवों तक पहुँच गया जहाँ बिजली व पानी की सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं है। आज स्थान विशेष की संस्कृति नहीं बची है। उसकी जगह एक ग्लॉबल संस्कृति ने ले ली है।

ग्लॉबलाइजेशन के दबाव के कारण हमारी पहचान (धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषायी, क्षेत्रीय) का संकट भी लगातार गहराता जा रहा है। हम जैसे-जैसे आर्थिक प्रगति और उपभोग के बड़े संसार से जुड़ रहे हैं, वैसे-वैसे अपनी भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता से दूर हो रहे हैं। ग्लॉबलाइजेशन के दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति और बाजारवाद सम्पूर्ण मानव जाति को प्रभावित कर रहे हैं। आज अमीर ज्यादा अमीर व गरीब ज्यादा गरीब होता जा रहा है। आज भारत भले ही विश्व की महाशक्तियों की पंक्ति में खड़ा हो गया है, परन्तु उसकी अस्मिता गायब होती जा रही है। दुनिया में वर्तमान समय में एक ही संस्कृति की धूम मची हुई है। इसे लोग भले ही ग्लॉबल संस्कृति कह रहे हैं, लेकिन वह संस्कृति वास्तव में खुदगर्जी, मुनाफे और निर्ममता की संस्कृति है। बाजार का प्रवेश घर-घर में हो चुका है। पारिवारिक रिश्तों में भी बाजारवाद आने लगा है।

इक्कीसवीं सदी को सबसे ज्यादा प्रभावित अर्थशास्त्र के ढाँचे ने ही किया है। अर्थशास्त्र ने इस सदी के यथार्थ को ही बदल कर रख दिया है। आज ग्लॉबलाइजेशन, संचारक्रान्ति, मीडिया विस्फोट, बाजारवाद के कारण

समाज एवम् पारंपरिक साहित्य में जबरदस्त परिवर्तन हो रहे हैं। संस्कृतियों का संक्रमण हो रहा है। जीवन मूल्य बदल रहे हैं। ग्लॉबलाइजेशन के कुछ सकारात्मक प्रभाव भी रहे है। जिनके कारण ज्ञान के नवीन क्षेत्र विकसित हुए है। भारत को विश्व की आर्थिक शक्ति बनाने की पीछे भी ग्लॉबलाइजेशन व बाजारवाद का ही प्रभाव माना जाना चाहिए। आर्थिक तरक्की से लोगों की ताकत बढ़ गई है। वे पहले से ज्यादा मुखर, तेज और दबंग बन गए हैं।

ग्लॉबलाइजेशन

विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं और संस्कृतियों का मेल और एकरूपीकरण ग्लॉबलाइजेशन है, जिसकी शुरुआत पन्द्रहवीं सदी में उस समय हुई, जब कुछ साहसी यूरोपीय व्यापार की मंशा से नए देशों की खोज में निकले। प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिक अभय कुमार दुबे अपनी प्रसिद्ध पुस्तक भारत का भूमंडलीकरण में लिखते हैं कि ‘‘ग्लॉबलाइजेशन का प्रधान अर्थ है- एक विश्व-अर्थतंत्र और विश्व बाजार का निर्माण जिससे प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को अनिवार्य तौर से जुड़ना होगा। ...कम्प्यूटर, इंटरनेट और संचार के अन्य आधुनिकतम साधनों के जरिये दुनिया में राष्ट्रों, समुदायों संस्कृतियों और व्यक्तियों के बीच फासलों का कम से कमतर होते चले जाना है।’’ (अभय कुमार दुबे (सं.), भारत का भूमंडलीकरण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ. 439-440) प्रथम चरण - ग्लॉबलाइजेशन का पहला चरण 1492 ई. में कोलंबस की नई और पुरानी दुनिया के बीच व्यापार का मार्ग प्रशस्त करने वाली यात्रा से शुरु होकर 1800 ई. तक चलता है। इसने दुनिया को सिकोड़ कर बड़ी से मध्यम आकार में बदल दिया। इस चरण में परिवर्तन का मुख्य घटक और ग्लॉबल एकीकरण की चालक शक्ति देशों की ताकत मतलब बाहुबल, वायु शक्ति और बाद में वाष्प शक्ति को सर्जनात्मक ढंग से प्रयुक्त कर फैलाने की सामथ्र्य थी। विश्व को एक साथ गूँथकर ग्लॉबल एकीकरण का काम इस दौरान देशों और सरकारों ने किया।